Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगी का वीरकाव्य

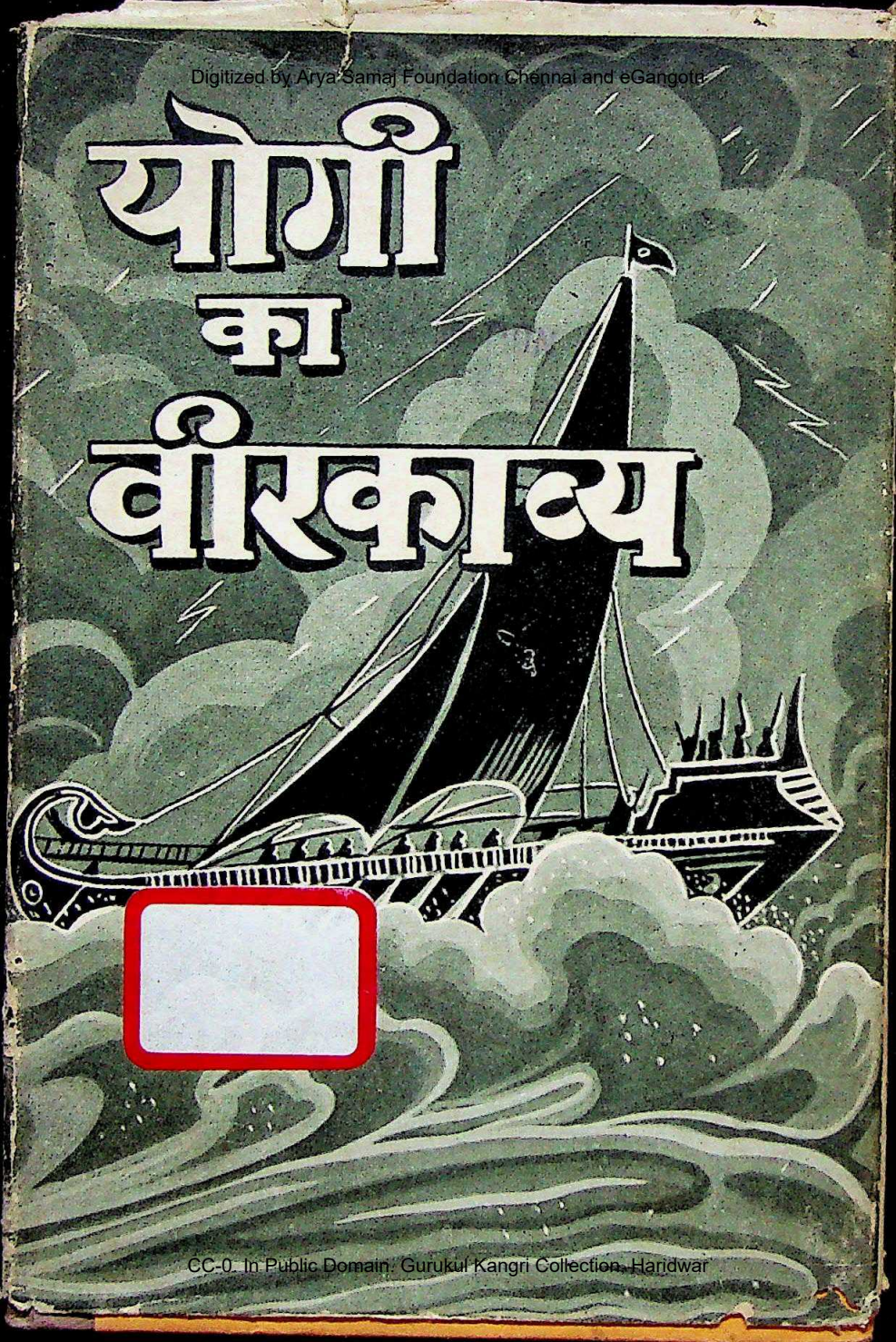

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या..... आगत संख्या.....

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगी का वीरकाव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

9295
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगी का वीरकाव्य

आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति
भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त
ग्रंथ संख्या 9295

सङ्कलनकर्त्री

राजरश्मि, एम. ए.

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

प्राप्ति स्थान

गोविन्दराम हासानन्द

नई सड़क, दिल्ली-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

© सत्यभूषण 'योगी'

प्रथमावृत्ति : सितम्बर, १९६३

मूल्य २-५०

प्रकाशक : राजरश्मि एम. ए.
सेन्ट स्टीफन्स कालिज,
युनिवर्सिटी कैम्पस
दिल्ली-६.

मुद्रक : हरिश्चन्द्र प्रेस,
नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो शब्द

अपने जीवनसहचर की कविताओं में से कुछ का सङ्कलन प्रस्तुत है।

उनके और इनके विषय में क्या हूं ?

राजरश्मि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि का परिचय

नाम—सत्यभूषण योगी

जन्मतिथि—१४ नवम्बर १९१७

पितृ नाम—स्वर्गीय श्री आचार्य रामदेव जी

मातृ नाम—स्वर्गीया श्रीमती विद्याधरी जी

शिक्षा—गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार तथा सेंट स्टीफन्स कालिज, दिल्ली

कार्य—अध्यक्ष संस्कृत-हिन्दी-विभाग, सेन्ट स्टीफन्स कालिज, दिल्ली

पता—सेन्ट स्टीफन्स कालिज, यूनीवर्सिटी कैम्पस्, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

१. युद्ध	...	...	६
२. अंगारे	...	...	१३
३. नहीं रुकूँगा मैं हूँ निष्ठुर	...	...	१६
४. चलना सरल नहीं इस पथ पर	...	...	२०
५. बनो सजनि, तुम जलती ज्वाला	...	...	२१
६. सखि, चलना है तूफानों में हमको, शक्ति संजोलो	...		२२
७. धन्य धन्य ओ अत्याचारी कर तू अत्याचार	...		२३
८. मिट्टी और पत्थर	...	...	२४
९. प्रश्न पत्र मत सरल बनाना	...	...	२५
१०. सरल—कठिन	...	...	२६
११. सपने—जागृति	...	...	२७
१२. नरमी—कमजोरी ?	...	...	२८
१३. सिंह और कुत्ता	...	...	३०
१४. नहीं सरल है	...	...	३१
१५. देने वाले कौन.....	...	...	३२
१६. मेरी यह छोटी सी तरणी	...	...	३३
१७. बहा जा रहा हूँ	...	...	३४
१८. जिस दिन तेरा सीस झुक गया	...	...	३६
१९. आत्म-परिचय	...	...	३७
२०. पाप वहाँ शान्ति है	...	...	४१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१. भूल ४६
२२. दीप का सन्देश ४८
२३. कवि रवि ४९
२४. आज आज तुम खुशी मनाओ ५१
२५. आगे कदम बढ़ाओ ५६
२६. हवाई दुर्घटना ६०
२७. सौभाग्य—दुर्भाग्य ? ६४
२८. भुखमरी स्वीकार मुझको ६७
२९. मानव, अपना अपमान न कर ६९
३०. लौटा मान कभी क्या जाकर ? ७०
३१. पहन लिया वैरागी बाना ७१
३२. जब काला तम छा जाता है ७४
३३. गाड़ी छूट गई ७६
३४. कभी मांगने को मेरा कर... ... ... ७८
३५. पन्थी, इस क्षण से पहले जो बीता वह बीता ... ८०
३६. कुछ भी तेरे अनुकूल नहीं ८१
३७. अब मैं कैसे वापस जाऊँ ? ८३
३८. मुझे चाहिए ऐसा साथी संग बहे मँझधार ... ८४
३९. नदी ८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध

युद्ध निरन्तर युद्ध विश्व है
युद्धों की ही एक कहानी

शान्ति ! कहाँ है शान्ति ?
यहां तो प्रतिपल रिपुओं से लड़ना है
नित्य उलझना समरांगण में
बस सीना ताने अड़ना है
भोले भाले सीधे साधे
नहीं यहां पर जीने पाते
जो लड़ते आगे बढ़ते हैं
वे ही जीवन गाना गाते
नहीं मिली यह शान्त बैठने
को हमको अनमोल जवानी
युद्ध निरन्तर युद्ध विश्व है
युद्धों की ही एक कहानी

— २ —

फाड़ भूमि का वक्षःस्थल यह
अंकुर ऊपर को उठ आता
अन्दर शान्त बन्द हो रहना
नहीं हृदय को इसके भाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोड़ प्रबल चट्टानों को यह
झरना शोर मचाता चलता
पागल बेसुध विस्मृत-सा
पत्थर पर सिर पटकाता चलता
हम न रुकेंगे हम न दबेंगे
हमको तो है क्रान्ति मचानी
युद्ध निरन्तर युद्ध विश्व है
युद्धों की ही एक कहानी

— ३ —

'लड़ो बढ़ो' का शोर मचाते
काले काले बादल आएं
उनका गिरे पसीना रिमझिम
धरती यह गीली हो जाए
उनकी तलवारों की चमकें
हँसते हँसते क्या कह जातीं
जलनिधि की उत्ताल तरगें
किस अशान्ति के गायन गातीं
जो लड़ सकता वही पूर्ण है
वही सत्य जीवन का ज्ञानी
युद्ध निरन्तर युद्ध विश्व है
युद्धों की ही एक कहानी

— ४ —

यह पृथ्वी यह पागल पृथ्वी
सूने नभ में दौड़ रही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरज से लड़ने की इच्छा
उसके मन म सदा रही है
इसीलिए यह बदल पैंतरे
उसके चारों ओर घूमती
उसको नष्ट भ्रष्ट करने की चिन्ता
इसका हृदय हूलती
है निर्बल है लेकिन अपनी
धुन की पक्की यह दीवानी
युद्ध निरन्तर युद्ध विश्व है
युद्धों की ही एक कहानी

— ५

कितना निश्चल कितना नीरव
सूरज दुनिया को चमकाता
किसे पता है वह अपनी ही
ज्वाला में है जलता जाता
पागल होकर घूम रहा है
उगल रहा है आग भयंकर
सतत अशान्ति युद्ध ज्वाला है
उसके बाहर उसके अंदर
नहीं शान्ति से घड़ी एक भी
कभी मिली है उसे बितानी
युद्ध निरन्तर युद्ध विश्व है
युद्धों की ही एक कहानी

— ६ —

लड़ते जाओ बढ़ते जाओ
क्या रुकने का यहां काम है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुकना मृत्यु और यह जीवन
लड़ने का ही एक नाम है
जो लड़ता है वही राम है
उसको ही मिलती है सीता
इसी युद्ध की शिक्षा देती
कृष्ण कन्हैया की वह गीता
वहीं सत्य सुन्दर शिव रहते
रहतीं जहां शक्ति कल्याणी
युद्ध निरन्तर युद्ध विश्व है
युद्धों की ही एक कहानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगारे

समझो मत हमको ठंडे
हम दहक रहे अंगारे हैं
भूल जायँगे बढ़े चढ़े जो
गर्व गुमान तुम्हारे हैं
आई ऊपर राख और ही
असली रूप हमारे हैं
समझो मत हमको ठंडे हम
दहक रहे अंगारे हैं

— २ —

जल जल कर ही प्रतिपल हमने
स्वयं जलाना है सीखा
पर न किसी को भी बेमतलब
कभी सताना है सीखा
मानवता को हमने केवल
सुख पहुँचाना है सीखा
जल जल कर ही प्रतिपल हमने
स्वयं जलाना है सीखा

— ३ —

सच है हम चुपचाप पड़े रहते
न किसी को कुछ कहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर न कभी भी हम अपना
अपमान तनिक भी हैं सहते
जो हम पर आकर पड़ता है वह
मरता है दहते दहते
सच है हम चुपचाप पड़े रहते
न किसी को कुछ कहते

— ४ —

हमीं शम्भु के लोचन में थे
जिनसे मन्मथ राख हुआ
बाणों में थे हमीं राम के
जिनसे दशमुख खाक हुआ
हमें छेड़ने वालों को रख
सकती कोई भी न हुआ
हमीं शम्भु के लोचन में थे
जिनसे मन्मथ राख हुआ

— ५ —

दुःशासन ने नहीं छुआ था
पाञ्चाली के आंचल को
उसने छेड़ा था उस रोज
हमारे ही क्रोधी दल को
हमको आज छेड़कर कोई
देख कभी पाया कल को ?
दुःशासन ने नहीं छुआ था
पाञ्चाली के आंचल को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— ६ —

वीर प्रताप शिवा जी का
हमने ही खून उबाला था
झांसी की रानी ने पिया
हमारा जलता प्याला था
लाल हमारी ही ज्वाला पर
भगतसिंह मतवाला था
वीर प्रताप शिवा जी का
हमने ही खून उबाला था

— ७ —

वीर न्याय की रक्षा करने
युद्ध भूमि में जो लड़ते
दुर्गम पर्वत पर हिम में जो
वक्ष खोल आगे बढ़ते
हम ही उनके देहों में तब
गर्मी ताप भरा करते
वीर न्याय की रक्षा करने
युद्धभूमि में जो लड़ते

— ८ —

सूने मरघट में बैठे हम
निशिदिन गाया करते हैं
ऊंच नीच सबके स्वागत को
हाथ बढ़ाया करते हैं
सबको अगले जीवन का
सन्देश सुनाया करते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूने मरघट में बैठे हम
निशिदिन गाया करते हैं

— ९ —

रजनी में वे आसमान में
कितने अंगारे जलते
उनके सपने मोती बनकर
नित्य धरा पर हैं ढलते
रहो धधकते प्रतिपल वे
सन्देश यही देते रहते
रजनी में वे आसमान में
कितने अंगारे जलते

— १० —

लाल लाल प्रातः पूरब में
जलता अंगारा आता
स्नेहदृगों से हमें देखकर
नीरव कुछ कहता जाता
तुम प्रतीक मेरे धरती पर
तुम्हें देख मैं हरषाता
लाल लाल प्रातः पूरब में
जलता अंगारा आता

— ११ —

एक हमारी चिनगारी से हो
बड़े बड़े वे ९१राख महल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महल अरे क्या सब त्रिभुवन में
लग जाए वह घोर अनल
शीत अम्बुनिधि में भी लग जाए
वह भारी वड़वानल
एक हमारी चिनगारी से हो
बड़े बड़े वे राख महल

— १२ —

कहीं न ऐसा वैसा हमको
भाई, कभी समझ रखना
जो कहते हैं वह करते हैं
सीखा न कभी झूठा बनना
हम यों ही नहीं जला करते
कुछ मतलब रखता है जलना
कहीं न ऐसा वैसा हमको
भाई, कभी समझ रखना

— १३ —

सचमुच कितने बुद्धिहीन तुम
हमें पकड़ना चाह रहे
तुम नाचीज़ हमारे आगे
आज अकड़ना चाह रहे
तिनके पत्तें अंगारों से
आज झगड़ना चाह रहे
सचमुच कितने बुद्धिहीन तुम
हमें पकड़ना चाह रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— १४ —

नहीं फूल हम जो कि हमें
चुपचाप उठाने पाओगे
हम गुलाब-से सुन्दर हैं
पर नहीं चुराने पाओगे
दूर रहो हम सच कहते तुम
तड़प तड़प भुन जाओगे
नहीं फूल हम जो कि हमें
चपचाप उठाने पाओगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं रुकूंगा मैं हूँ निष्ठुर

कोई संगी मिलता पथ पर
स्वागत हित बढ़ता मेरा कर
उसको मैं कहता हूँ बढ़ चल
अगम शैल विघ्नों को तू दल
पर यदि कोई है रुक जाता
मुझे देखकर अश्रु बहाता
कहता—"आकर मुझे सँभालो
कंधे पर तुम मुझे उठालो
तब कहता हूँ मैं चिल्लाकर
पागल होकर औ' गुर्रा कर
दुर्बल हो तो तुम मर जाओ
या फिर उर में शक्ति जगाओ
आओ तुम सहयात्री बनकर
अपने चरणों में गति बल भर
तुमको मीत बना सकता हूँ
तुमको गीत सुना सकता हूँ
अगर अँधेरा पथ में आए
साथ चलूँगा दीप जलाए
पर न किसी को ले जाऊँगा मैं कंधे पर कभी उठाकर
नहीं रुकूँगा मैं हूँ निष्ठुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलना सरल नहीं इस पथ पर

पग पग कांटे रोड़े पत्थर
पल पल महायुद्ध गर्जन स्वर
बस बिना सहारे इकले ही बढ़ना करते युद्ध निरन्तर
चलना.....

— २ —

नहीं किसी पर हो तुम निर्भर
आओ अपने घर से बाहर
इस पथ के यात्री चलते हैं सब उठा उठा अपना बिस्तर
चलना.....

— ३ —

इस पथ पर पग पग जीवन-स्वर
स्वागत उसका जो आए नर
लानत, मांगे जो कि सहारा यहां किसी से फैला कर कर
चलना.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

9295

बनो सजनि, तुम जलती ज्वाला

तुमको कोई लांघ न पाए
आंख न कोई तुम्हें दिखाए
इतना ऊँचे उठो व्योम में छा जाए भास्वर उजियाला
बनो.....

— २ —

बुझ जाओगी क्या पाओगी
रौंदी चरण तले जाओगी
और उड़ेगी राख चतुर्दिक् छाएगा दुःखद तम काला
बनो.....

— ३ —

ज्वाला दाय हमारा रानी
ज्वाला की ही सृष्टि कहानी
नायक है ज्योतिर्मय मानव अंगारों पर चलने वाला
बनो.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

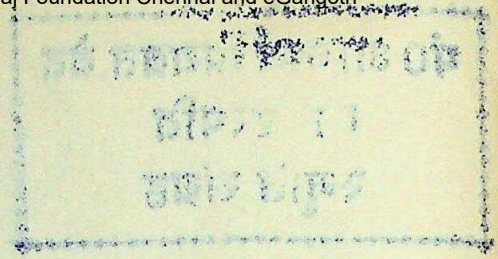

सखि, चलना है तूफानों में हमको, शक्ति संजो लो

चलना प्रेयसि, सँभल सँभल कर के
झपे न पल को भी ये पलकें
दुर्गम गिरि पर चढ़ना हमको कहो सज्ज हो बोलो
सखि.....

तजा सुरक्षित है हमने स्थल
अब आगे है बस जल ही जल
सावधान हो प्रेयसि, अपने कर चरणों को तोलो
सखि.....

तुम्हें विविध नृत्यों का अनुभव
करना आज हमें है ताण्डव
अंग अंग के सारे बन्धन सखि, निर्भय हो खोलो
सखि..... .....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्य धन्य ओ अत्याचारी कर तू अत्याचार

झुके हुए को और झुका तू
दबे हुए को और दबा तू
टूट पीठ औ' गर्दन जाए
हाय, हाय, कर वह चिल्लाए
मिले भूमि में उसका कण कण निर्मम होकर मार
धन्य धन्य ओ अत्याचारी कर तू अत्याचार

— २ —

गिरा हुआ जो जन धरती पर
उसे रौंद दे रख पद दृढ़तर
मिल जाए मिट्टी में शव हो जीवन की जयकार
धन्य धन्य ओ अत्याचारी कर तू अत्याचार

— ३ —

जी न सका जो सीस उठा कर
सुन न सका जो जीवन का स्वर
अच्छा है बन जाए मिट्टी नव जीवन का द्वार
धन्य धन्य ओ अत्याचारी कर तू अत्याचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिट्टी और पत्थर

मिट्टी पर पड़ते चरण और मिट्टी चिल्लाती है
कहती वह उठ उठ कर ऊपर
पन्थी, चल तू सँभल सँभल कर
हाय, कुचलता है तू मुझको क्यों दया न आती है
मिट्टी पर पड़ते चरण और मिट्टी चिल्लाती है

— २ —

ओ मिट्टी, तू व्यर्थ कलपती
यह संसृति ऐसे ही चलती
अबल वस्तु पैरों के नीचे रौंदी जाती है
मिट्टी पर पड़ते चरण और मिट्टी चिल्लाती है

— ३ —

रो मत मिट्टी बन तू पत्थर
जगत् चलेगा सँभल सँभल कर
नहीं प्रार्थना शक्ति स्वान्त की काम यहां आती है
मिट्टी पर पड़ते चरण और मिट्टी चिल्लाती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न पत्र मत सरल बनाना

करना रहम नहीं तुम मुझ पर
नहीं गिराना तुम नीचे स्तर
टके टके में कीर्ति बिकी तो क्या उसका खोना क्या पाना
प्रश्न पत्र मत सरल बनाना

— २ —

लाना खोज कठिनतम तुम स्थल
बात बात में चक्कर भ्रम छल
कसर न रखना रह जाएगा जीवनभर मन में पछताना
प्रश्न पत्र मत सरल बनाना

— ३ —

किया बहुत मैंने श्रम प्रतिपल
नक्तन्दिव खर ज्वाला में जल
सुनो परीक्षक मेरे अच्छे तुम मज़ाक मेरा न उड़ाना
प्रश्न पत्र मत सरल बनाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल—कठिन

जो सरल सरल तुम जिसको चाहे दे दो
ढूंढ ढूंढ कर दो तुम मुझको कठिन कठिन
एक एक बूँद रक्त की मेरे ले लो
रे तुमसे मांगी मैंने करुणा किस दिन

— २ —

रक्खो अपने राजमार्ग—चिकनी सड़कें
मैं यात्री हूँ कण्टक वन गिरि दुर्गम का
बैठो द्वार बन्द कर तुम सारे घर के
बजता झंझा में पायल मम सरगम का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपने—जागृति

सपने ये अच्छे होते हैं यदि जागृति का साथ न छोड़ें

सजनि, गुलाब घिरा कांटों से
कीचड़ से है घिरा कमल
मानव के हर सफल स्वप्न को
घेरे बैठा है श्रम जल

हर रमणीय विशाल हर्म्य की नींव बने बदसूरत रोड़े
सपने.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरमी—कमज़ोरी ?

समझ हाय, तुम बैठे मेरी
नरमी को कमज़ोरी

केवल हाय, समझते हो तुम
डंडे की ही भाषा
अतः साधु की शान्ति तुम्हारे
हित हो गई तमाशा
और लगे करने तुम चोरी
उससे सीनाजोरी
समझ हाय, तुम बैठे मेरी
नरमी को कमज़ोरी

— २ —

तुमने मलय-समीरण का
तूफ़ान नहीं देखा है
तुमने मृदु माखन का
वज्रविधान नहीं देखा है
आशुतोष की प्रलयदृष्टि ने
सृष्टि सकल झकझोरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ हाय, तुम बैठे मेरी
नरमी को तुम कमज़ोरी

— ३ —

सुनी गोपिका-वल्लभ की है
केवल वंशी-तान
चक्र सुदर्शन की कठोरता
का न तुम्हें अनुमान
ओछा हृदय तुम्हारा समझ
तुम्हारी कितनी थोड़ी
समझ हाय, तुम बैठे मेरी
नरमी को कमज़ोरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह और कुत्ता

गुर्राता है कुत्ता और सिंह भी गुर्राता है
पर दोनों में कितना अन्तर

सीस झुकाता प्रेम दिखाता
पैर चाटता पूँछ हिलाता
मौका देख कभी गुर्राता
पत्थर औ' सोटी है खाता
भौं भौं करता पूँछ दबाकर पीछे भग जाता है

— २ —

बड़ी शान से सीस उठाकर
(उठती है उसकी पूँछ लहर)
सोते सोते भी गुर्राता
वन का राजा है कहलाता
उसे देखता जो वह घबरा पीछे हट जाता है
गुर्राता है कुत्ता और सिंह भी गुर्राता है
पर दोनों में कितना अन्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सरल है

नहीं सरल है नहीं सरल है नहीं सरल है
बहुत कठिन है बहुत कठिन है बहुत कठिन है
प्रिय, मैंने कब आसान कहा
प्रिय, कभी न भ्रम में रखा, रहा
यह तो असिधारा पर चलना
बहुत कठिन है
नहीं सरल है

— २ —

मिलता सब कुछ श्रम से दुख से
मिलती सिर्फ गुलामी सुख से
सरल नहीं अपने को छलना
नहीं सरल है
बहुत कठिन है

— ३ —

उठ जाओ उर में साहस भर
टूटें ये कड़ियां कड़ कड़ कर
इस बन्धन से छूट निकलना
बहुत कठिन है
नहीं सरल है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने वाले कौन·····

देने वाले कौन मुझे होते हो तुम
जो लेता हूं आत्म-शक्ति से लेता हूँ
टकरें हैं अब तक तुमको भिखभंगे गुमसुम
छीना करता, नहीं भक्ति से लेता हूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी यह छोटी सी तरणी

ये सागर के तट की लहरें
तूफ़ानी भू अम्बर घहरें
छोड़ा इसको उन पर, बार बार यह उलटी नीचे ऊपर
मेरी यह छोटी-सी तरणी

— २ —

आई मध्य-सिन्धु में फिर यह
शान्त ऊर्मियां उठती रह रह
यह झूली मधुमय झूले पर मधुर स्वप्न स्मिति से भर अन्तर
मेरी यह छोटी-सी तरणी

— ३ —

तट पर ही जो डर जाते हैं
कहां पहुँचने वे पाते हैं
सूखी ठंडी तपती बालू पर बैठे रहते वे कायर
मेरी यह छोटी-सी तरणी
लहरों से उलझी निर्भय ही लेकर शाश्वत जीवन का स्वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहा जा रहा हूँ

दिये छोड़ ये आज दोनों किनारे
बहा जा रहा हूँ लहर के सहारे

लहर के सहारे बहा जा रहा हूं
नहीं ज्ञात क्यों मैं कहां जा रहा हूं
स्वयं आप पर आज मुस्का रहा हूं
बिना हाथ मारे बिना पैर मारे
बहा जा रहा हूँ लहर के सहारे

— २ —

चला अब तलक रेतवाले तटों पर
तथा खूब काटे दिवस हार थक कर
चुभे शूल हँसता रहा और अम्बर
वहां कौन सुनता हृदय की पुकारें
बहा जा रहा हूँ लहर के सहारे

— १ —

बहा जा रहा हूं बढ़ा जा रहा हूं
लहर से लहर पर चढ़ा जा रहा हूं
लहर नाचती और मैं गा रहा हूं
सजग कल्पना ने नये पर पसारे
बहा जा रहा हूं लहर के सहारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— ४ —

दिया छोड़ मैंने इधर का किनारा
न ही चाहता हू उधर का किनारा
मुझे आज मँझधार का रूप प्यारा
कदम साहसिक ये मुझे बहुत प्यारे
दिए आज वे छोड़ दोनों किनारे

— ५ —

हृदय में नवल कामनाएं जगी हैं
करूं कुछ मरूं या लगन यह लगी है
सभी कुछ अनिश्चित यही जिन्दगी है
लगा दूँ न क्यों दांव पर फिर सितारे
दिए छोड़ ये आज दोनों किनारे
बहा जा रहा हूं लहर के सहारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस दिन तेरा सीस झुक गया

उस दिन डूबा स्रष्टा का दिल
हुई दृगों से ओझल मंजिल
जिस दिन तू रसपान हेतु प्रिय, अपने पथ के बीच रुक गया

— २ —

इच्छा तेरी सब कुछ पकड़ूं
यह भी ले लूं वह भी ले लूं
पर पाया तू भोग न कुछ भी तू ऐसा बेतरह थक गया

— ३ —

ले खाना तो सीख बावले
खाने के संग्रह से पहले
क्या पाया यदि दब भोगों में भोक्ता का ही सांस घुट गया

— ४ —

भरा तेल बाती भी नूतन
औ' अति सुन्दर दीपक का तन
किन्तु ज्योतिकण नहीं मिला तो किसने उसको दीप कह दिया ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्म-परिचय

मैं जीवन का भीषण दुर्दम
प्रलयंकर तूफ़ान लिए हूं
अपने दिल में मर मिटने का
मैं स्वर्णिल अरमान लिए हूं
जिसको सुन रिपु के दिल टूटें
मैं वह भैरवगान लिए हूं
मुझे मृत्यु भय ? अरे हथेली
पर मैं अपनी जान लिए हूं

— २ —

दुष्टों के प्रासाद गिरादे
मैं वह कुलिश कराल लिए हूं
चुन चुन कर भूनें अरियों को
दो जलते अंगार लिए हूं
जो त्रिभुवन को करे प्रकम्पित
ऐसा हाहाकार लिए हूं
मैं निर्दय हूं क्योंकि हृदय में
मैं करुणा साकार लिए हूं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— ३ —

मैं क्या हूं मैं मर्त्य नहीं
शिव सुन्दर सत्य विचार लिए हूं
कल्पवृक्ष मैं अमर फलों का
एक मधुर भण्डार लिए हूं
धूलिसात् करदे शैलों को
मैं वह शक्ति अपार लिए हूं
मुर्दों में भी जान डालदे
वह जीवनझनकार लिए हूं

— ४ —

तू कहता है मेरे जीवन में
बिल्कुल भी सार नहीं है
अपना सब कुछ खो देना यह
दुनिया का व्यवहार नहीं है
रहे मुबारक तुझे कुशलता
यह मुझको दरकार नहीं है
तेरी दुनिया और कहीं है
मेरी दुनिया और कहीं है

— ५ —

मुझको खोने में ही अपना
वह प्यारा संसार मिला है
मुझको रोने में हँसना
औ' निष्ठुरता में प्यार मिला है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूक हृदय में मुझको अगणित
बातों का भण्डार मिला है
सूखे पतझर में मुझको प्रिय
मधु वसन्त साकार मिला है

— ६ —

मैं अपने छोटे-से दिल में
कितना कटु चीत्कार लिए हूं
आत्म-विसर्जन करदे ऐसा
मैं दृढ़ मधुमय प्यार लिए हूं
कितनी दुखद निराशाओं का
अपने सिर पर भार लिए हूं
मैं पागल, मैं जान बूझ कर
पीड़ा का संसार लिए हूं

9295

— ७ —

मैं क्या हूं, मैं मर्त्य नहीं
मुझसे जग को वरदान मिला है
मैं कवि हूं मुझसे इस जग को
जीवन का मधुगान मिला है
मेरा प्रेम नहीं सीमा में
मुझे असीम विहान मिला है
नहीं बद्ध मैं मुझे मुक्ति का
दिव्य अनोखा दान मिला है

— ८ —

मेरे इन अस्थिर प्राणों ने
चिर विप्लव का गान किया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांटे ले लेकर दुनिया को
फूलों का मधु दान दिया है
बदले में क्या मिला, न मैंने
इस पर कुछ भी ध्यान दिया है
मैंने अपना काम किया है
जग ने अपना काम किया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाप वहाँ शान्ति है

इष्ट जहां क्रान्ति है
पाप वहां शान्ति है

झाड़ झंखाड़ मध्य
वृक्ष अम्बार मध्य
खेत बनते नहीं
मार्ग सजते नहीं
प्रेम वहां भूल है
शान्ति भी फजूल है
वहां आग चाहिए
क्रान्तिराग चाहिए
वहां ज्वाल चाहिए
महाकाल चाहिए
नहीं बोध चाहिए
वहां क्रोध चाहिए
जले आग क्षार हो
कालजयकार हो
हहर हहर के
घहर घहर के
ज्वाल-जाल की लटें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह जले औ' वह मिटे
सनसना उठे पवन
तड़तड़ा उठे विपिन
भड़भड़ा उठे गगन
घड़घड़ा उठे भुवन
शुभ्र भस्म शेष हो
निर्मल प्रदेश हो
शम्भु का शृंगार हो
नव सृष्टि-द्वार हो
शान्ति तथा प्यार हो
बनें खेत नया पथ
विघ्नहीन नया अथ
नया बाग नए फूल
नया जल नए कूल
नहीं कुछ प्रतिकूल
सभी कुछ अनुकूल
किन्तु स्थल हो विषम
तब शान्ति विषसम
तब प्रेम भूल है
शान्ति भी फजूल है
तब आग चाहिए
कालराग चाहिए
तब मौन जो रहे
उसे क्लीब ही कहें
खून उसका सर्द है
कहो वह क्या मर्द है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुल्म में जो चुप खड़ा
वह मुजरिम बड़ा
मौन अश्रु भूल हैं
आह भी फजूल है
तब दहाड़ चाहिए
तब हुंकार चाहिए
सिंहनाद चाहिए
वज्रनाद चाहिए
मृत्यु अनिवार्य है
किन्तु जो कि आर्य है
जुल्म सहता नहीं
मौन रहता नहीं
लाभ-हानि सुख-दुख
हार-जीत से विमुख
करता वह युद्ध है
मन से प्रबुद्ध है
जुल्म से नहीं डरे
युद्ध करते मरे
मित्र, वही आर्य है
युद्ध अनिवार्य है
आज कल आएगी
तुम्हें ले के जाएगी
एक दिन एक क्षण
मरो मृत्यु के दिन
हाय, डरते हो क्यों
रोज मरते हो क्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु से नहीं मरे
ज़िन्दा भी हो मरे
अगर तू मर्द है
खून नहीं सर्द है
जुल्म सहना नहीं
मौन रहना नहीं
याद मुझे आ रहा
दयानन्द का कहा—
'जालिम से बढ़ पाप
जानिए निश्चित आप
उस नीच का अहा
जुल्म जिसने सहा,
याद मुझे आ रहा,
श्री रवीन्द्र का कहा—
'जुल्म जो करे सहे
गला दोनों का गहे
ईश फूसराशि डाल
सुलगाए अग्निज्वाल'
मृत्यु अनिवार्य है
मित्र, वही आर्य है
जो बढ़े रुके नहीं
जो लड़े झुके नहीं
लड़े स्वत्व के लिए
लड़े सत्य के लिए
जय भले न पा सके
सिर तो उठा सके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्र, यह ही ज़िन्दगी
और यह ही बन्दगी
इष्ट जहां क्रान्ति है
पाप वहां शान्ति है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल

मेरा जीवन फूल
था मस्त डाल भूल
झंझावातें
निर्दय घातें
आईं इस पर
ले दुख रातें
पर उन पर यह नाचा थिरका हुईं सभी अनुकूल
मेरा जीवन फूल

कमी सलिल की
इसे न अखरी
बल्कि वदन पर
शोभा निखरी
न सुखा पाया रवि तपता वह होकर भी प्रतिकूल
मेरा जीवन फूल

कितने आए
हाथ बढ़ाए
लोभी पथिक
'इसे ले जाएं'
पर उनके हाथों में जाकर गड़े भयंकर शूल
मेरा जीवन फूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर कोई आ
निज प्रीत दिखा
ले गया इसे
रक्खा घर जा
यही इसे ले जाने वाले की थी भीषण भूल
पराधीन हो खिलता कैसे मेरा जीवन फूल ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीप का सन्देश

पहली निशानी ज़िन्दगी की ज़िन्दगी से प्यार है

जलते रहो हँसते रहो निज मार्ग पर बढ़ते रहो
ले निज हृदय में स्नेह ऊपर को सदा चढ़ते रहो
तमतोम हो तूफान हो सब विश्व यह विपरीत हो
तब भी न लौ नीचे झुके तो मृत्यु भी भयभीत हो
या तो बुझे बिल्कुल रहे या लौ सदा आराश में
जीवन सफल संघर्ष में उत्थान में विश्वास में
यदि सिर झुकाकर लीजिए तो जोत में भी हार है
पहली निशानी ज़िन्दगी की ज़िन्दगी से प्यार है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि रवि

कवि ने रवि से रवि ने कवि से
एक दिवस ये दो बातें की

रवि, आगे ही बढ़ते जाते
जलते और जलाते जाते
नभमण्डल म रहने वाले
देवों का भी तन झुलसाते
जलकर हुए अँगारे वे ही
देव निशा में दहका करते
अमित दुःख से और क्रोध से
भुँझला भुँझला कांपा करते
रवि बोला कवि को—हे भैया,
छोड़ो अपनी भावुकता को
बिना जले क्या जग में कोई
पा सकता ऊँची सत्ता को
जल कर बनें राख पल भर में
वे होते हैं तिनके पत्ते
इस दुनिया में जीने वाले
जलने को ही जीवन कहते
जल कर बने अँगारे जो ये
देव निशा में दहका करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव काँपते क्रुद्ध किन्तु वे
हँसी खुशी में नाचा करते

कवि ने रवि से रवि ने कवि से
एक दिवस ये दो बातें की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज आज तुम खुशी मनाओ

बीते कल का सोच करो मत
भावी कल किसने देखा है
इन दोनों के बीच आज की
मुस्काती स्वर्णिम रेखा है
यह प्रभात है प्राची में है
ऊषा का स्मिति-उज्ज्वल आनन
ये विहगों की मस्त उड़ानें
वितत व्योम में जीवन स्पन्दन
तुम भी गाओ तार मिलाओ
आज आज तुम खुशी मनाओ

— २ —

आज तुम्हारा अच्छा बीते
कल यह ही होगा मधु सपना
यहां अनिश्चित सखे सभी कुछ
केवल आज तुम्हारा अपना
कलपरसों दो बरस बाद क्या
होगा यह तुमको है चिन्ता
यह जो आज तुम्हारे बस में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान नहीं है तुमको इसका
नहीं हाथ की चीज़ गँवाओ
आज आज तुम खुशी मनाओ

— ३ —

यह अनन्त यात्रा है यात्री
हमको बहुत दूर है जाना
जिस दिन सुध आए वह ही दिन
पहला दिन कैसा घबराना
यह अनन्त है काल विगत की
चिन्ता से कुछ लाभ नहीं है
दो दिन पीछे सही पहुँच
जाओगे मंजिल जहाँ कहीं है
अगर आज पर कदम जमाओ
आज आज तुम खुशी मनाओ

— ४ —

थाम हाथ से सिर तुम बैठे
दैव कर्म दर्शन में उलझे
और आज भी भगा जा रहा
अब कोई तुमको क्या समझे
दर्शन सबसे बड़ा यही है
बढ़ो आज जीवन के पथ पर
डरो न दुख में रुको न सुख में
लक्ष्य दूर है बढ़ो निरन्तर
मात्र आज का साज सजाओ
आज आज तुम खुशी मनाओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— ५ —

इस संसृति में एक सत्य है—
मनुज आज का महाराज है
इसको वह वश में करले तो
प्रस्तुत हीरों का जड़ा ताज है
सखे आज के इस प्रभात में
बने आज की सुदृढ़ योजना
फिर कल आ तुमको खोजेंगे
तुम्हें पड़ेगा कुछ न बोलना
स्वर ऊषा के सुनो सुनाओ
आज आज तुम खुशी मनाओ

— ६ —

यह पथ है अद्भुत जीवन का
बहुत कठिन है बहुत सरल है
मात्र भेद है दृष्टि बिन्दु का
यही अमृत है यही गरल है
अगर देखना सीख गए तुम
तो यह ही प्रिय देवभाव है
महाप्राप्ति है यहां उलझना
और पलायन ही अभाव है
दर्शन की गुत्थी सुलझाओ
आज आज तुम खुशी मनाओ

— ७ —

सन्मुख आकर के उलझो तुम
बचना और टालना निष्फल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनो विधात अमृत पुत्र तुम
प्रिय, विधेयता में है क्या बल
खुले वक्ष पर श्रम की बूंदें
नयनों में सत्योज्ज्वल दर्शन
त्रिभुवन को ललकार हृदय में
चिन्तनस्मिति से शोभित आनन
क्षण क्षण सावधान हो पाओ
आज आज तुम खुशी मनाओ

— ८ —

अरे भाग्य क्या है वह तो है
पहले ही कर्मों का संचय
वह तो एक गणित का लेखा
उसमें क्या सुख उसमें क्या भय
जो हिसाब में निकले ले लो
और आज का महल बनाओ
कम या ज्यादा जो कि हाथ में
उसे बढ़ाओ मत घबराओ
बढ़ो न बीते पर पछताओ
आज आज तुम खुशी मनाओ

— ९ —

दिल बहलाने को पीते हो
या दिल तुमको बहलाता है
कितना बचना हाय, सत्य तो
बार बार संमुख आता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां शान्ति संघर्ष-प्राप्य है
श्रम की बूँदों में शीतलता
यह विरोध ही अलंकार है
बनी हुई इससे मानवता
इसको समझो तो मुस्काओ
आज आज तुम खुशी मनाओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे कदम बढ़ाओ

रात तुम्हें दे स्वप्न प्रगति के
दिन में आगे कदम बढ़ाओ

भाई, तुम मुझको कहते हो—
'जैसे दुनिया चलती आई
औ' जैसे यह चलती है हम
बनें न क्यों इसके अनुयायी
धारा के विरुद्ध चलने में
क्यों करते हो मित्र वृथा श्रम
सपनों की दुनिया में खोए
क्यों ना शान्त बहे जाएं हम'

किन्तु लक्ष्य तो है धारा का
उद्गम यों निर्जीव काष्ठसम

लहरों संग बह हम पहुँचेंगे
कैसे कहां [तुम्हीं बतलाओ
रात तुम्हें दे स्वप्न प्रगति के
दिन में आगे कदम बढ़ाओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— २ —

ठीक कि लहरों के विरुद्ध
चलने से घोर थपेड़े लगते
जीर्ण शीर्ण हो जाती नौका
अंग अंग नाविक के दुखते
किन्तु विरोध करे लहरों का
मित्र, प्राण की यही निशानी
यदि बहते जाएं जड़ होकर
प्राणों की हस्ती बेमानी

सांस दिए जिसको स्रष्टा ने
बढ़े लक्ष्य की ओर वेग से

बहें स्वेद-लहरें टकराएं
लक्ष्य करे अगवानी—आओ !
रात तुम्हें दे स्वप्न प्रगति के
दिन में आगे कदम बढ़ाओ ।

— ३ —

एक सांस जब अन्दर आता
कहता बढ़ो उठो रे उलझो
महाशक्ति अन्दर है आई
अरे सांस की कीमत समझो
बिना लक्ष्य की ओर बढ़ाए
सांस जबकि बाहर आता है
व्यर्थ न जा सकता वह मानव
को अंदर से खा जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आओ बढ़ें नहीं नहीं उन नाचीजों
में अपना नाम लिखाएं

शान्ति गीत अन्त में होगा
अभी युद्ध के गीत सुनाओ
रात तुम्हें दे स्वप्न प्रगति के
दिन में आगे कदम बढ़ाओ

— ४ —

ये दुनिया की लहरें चीखेंगी
देंगी धक्के पर धक्का
कर देंगी नौका को चलनी
पर पक्का मानव का मुक्का
बरसों का संघर्ष—एक पग
तब मानव का आगे बढ़ता
वह क्या किश्ती लिखी न लहरों
ने जिस पर अपनी कठोरता
चिर अतीत से वीर मानवों
ने लहरों को ललकारा है
उनके स्वेद बिन्दुओं से ही
यह समुद्र का जल खारा है

हम सब उनके ही वंशज हैं
अनिश हमें आगे बढ़ना है

ये लहरें तो मेरा भोजन
मुझे न इनका भय दिखलाओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात तुम्हें दे स्वप्न प्रगति के
दिन को आगे कदम बढ़ाओ

— ५ —

आँखों में निश्चय, गति पद में
स्वेद-बिन्दु मस्तक पर सुन्दर
पूर्ण अडिग विश्वास हृदय में
और कण्ठ में जय जय का स्वर
अन्तर में मानव-आत्मा की
सीमाहीन शक्ति का सागर
सन्मुख धरती से अम्बर तक
लहरें ज्योति-ऊर्मियां भास्वर

नित्य नई बाधा का स्वागत
करने को हों प्राण मचलते

आओ संघर्षों के पथ पर
विजय गीत से गगन गुँजाओ
रात तुम्हें दे स्वप्न प्रगति के
दिन में आगे कदम बढ़ाओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई दुर्घटना

लगी आग धू धू करके यह
वायुयान नीचे गिरता

भू पर खड़े हुए सब मानव
काँप रहे अपने उर में
घड़ घड़ घड़ कर प्रलय आगई
अन्तरिक्ष के अन्तर में
टुकड़े टुकड़े होकर गिरा
जले मानव के सुन्दर तन
लो क्षण में सब खतम हो गया
मानव का सुन्दर जीवन
इसकी क्षणभंगुरता देखो
देखो इसकी नश्वरता
लगी आग धू धू करके यह
वायुयान नीचे गिरता

— २ —

पढ़ अखबार कह उठे साथी
नभ में उड़ना ठीक नहीं
भू पर ही चलना अच्छा है
बहुत सुरक्षित और सही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे मन में आया कह दूँ
चलने में भी है खतरा
अरे बन्द करके तुम बैठो
भलीभांति अपना कमरा
जिससे बनी रहे इस तन की
अस्थि मांस की शाश्वतता
लगी आग धू धू करके यह
वायुयान नीचे गिरता

— ३ —

मुझको तो गिरते जहाज का
दृश्य मनोहर लगता है
मुझको तो तूफानी सागर
का स्वर सुखकर लगता है
जो चढ़ते गौरीशंकर पर
यदि पथ में गिर भी जाते
उनके धन्य चरणयुग छूने
मेरे युगकर अकुलाते
उनके दो दिन के जीवन में
है स्रष्टा की सार्थकता
लगी आग धू धू करके यह
वायुयान नीचे गिरता

— ४ —

स्रष्टा की सर्वोत्तम कृतियाँ
जिनमें ज्योति अलौकिक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्हें बनाकर उसके उर को
मिलती शान्ति अभौतिक है
समारोह के बिना उन्हें वह
कभी नहीं ले जाता है
वह प्रकृति-तत्त्वों की सुन्दर
तब बारात सजाता है
शब्द ज्योति की धूमधाम में
वह अरथी के संग चलता
लगी आग धू धू करके यह
वायुयान नीचे गिरता

— ५ —

अरे फेफड़ों में प्रतिपल यह
भरी हवा यों ही हमने
भू से ऊपर उठ सके न कुछ
बस लिया किये हम जड़ सपने
उसमें क्या रस होगा जिसमें
चमक नहीं तूफान नहीं
होती नभ के उर में हलचल
तब होती है वृष्टि कहीं
घोर प्रसव-वेदना होती
तब जाकर जीवन खिलता
लगी आग धू धू करके यह
वायुयान नीचे गिरता

— ६ —

रगड़ रगड़ कर घुटनों के बल
मृत्यु सुन्दरी के दर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि यों पहुँचे तो क्या पहुँचे
सब यौवन जीवन खोकर
मैं तो उसको मानव कहता
जिसमें है अक्षय यौवन
मृत्यु सुन्दरी दौड़ी आती
करने जिसका आलिङ्गन
घर से निकल विकल पग-पायल
में संगम का स्वर बजता
लगी आग धू धू करके यह
वायुयान नीचे गिरता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौभाग्य—दुर्भाग्य ?

इसको अपना सौभाग्य कहो
अथवा दुर्भाग्य इसे समझो
जो कवि का तुमको साथ मिला
है दोष यही मेरा मैंने
दुनिया के लोगों के जैसे
रहना पसन्द है नहीं किया
है पाप यही मेरा मैंने
अपने मनचाहे रास्ते पर
कर साहस रख है कदम दिया
क्यों दुनिया मुझे कहे अच्छा
मैं क्यों चाहूँ कुछ दुनिया से
मैं छोड़ चुका हूं वे चाहें
दिखला दिखला जिनका लालच
दुनिया यह रोके रखती है
नित बढ़ने वालों की राहें
मेरी यह राह पसन्द करो
या नापसन्द कर आह भरो
मैं करता तुमसे नहीं गिला
इसको अपना·····

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— २ —

जो मुझे दीखता है रानी
मैं कैसे आँखें बन्द करूं
कर दूं देखे को अनदेखा !
जो जंचता मुझको मार्ग नहीं
मैं कैसे पांव रखूं उस पर
दे लूं कैसे निज को धोखा ?
मैं कब किसको कुछ कहता हूं
अपने रास्ते पर चलता हूं
पर जग को आता चैन नहीं
वह उलझे खुद मुझसे आकर
मेरी रानी, अब तुम्हीं कहो
है कौन गलत, है कौन सही
जब मैं पत्थर बन जाता हूं
औ' चोट जगत् को लगती है
वह उठता है सहसा चिल्ला
इसको अपना सौभाग्य.....

— ३ —

मैं कोमल हूं इतना शिरीष के
फूल चोट पहुँचा देते
जब छू जाते मुझको आकर
मैं हूं कठोर इतना लोहा
झुक जाता है मुड़ जाता है
जब देता मैं अपना पद धर
जङ्गल में राह बनाता मैं
लोगों से नहीं उलझता हूं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर उनको यह स्वीकार नहीं
वे अपना काम छोड़ करके
निर्जन में भी आ जाते हैं
मैं जहां खड़ा हूं ठीक वहीं
फिर मैं पागल यदि हो जाऊं
तूफान एक बरपा कर दूं
तो इसमें क्या आश्चर्य भला
इसको अपना सौभाग्य.....

— ४ —

तुम मेरे साथ चलोगी क्या ?
यह बड़ा अटपटा रास्ता है
इस पर चलना आसान नहीं
यदि साथ दे सको अच्छा है
पर इकला भी जाऊंगा ही
यदि सरल नहीं कुछ कठिन सही
मेरी यह अमर कल्पना प्रिय
जब तक साकार नहीं होती
हर मज़ा विरस है फीका है
यों ही ये सांस चले जाएं
जीतों में गिनती हो जाए
यों जीना प्रिये, न सीखा है
यदि जीव लोक में रहना है
तो जीवन की कुछ झांकी हो
या चिरनिद्रा हो अनाविला
इसको अपना सौभाग्य.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुखमरी स्वीकार मुझको

भुखमरी स्वीकार मुझको मौत भी स्वीकार
मैं नहीं अपमान सहने के लिए तैयार
एक दिन तो मौत का आना ज़रूरी है
विश्व से हर मर्त्य का जाना ज़रूरी है
किन्तु बुज़दिल श्वास-गति से प्यार करते हैं
एक दिन म हाय, वे सौ बार मरते हैं
किन्तु योगी को न ऐसी ज़िन्दगी दरकार
भुखमरी स्वीकार मुझको·····

— २ —

सिर झुकाकर जी लिए सौ बरस लंबी आयु !
जी लिए चलती रही या मात्र वह जड़ वायु ?
सौ बरस के बाद भी जाना जरूरी है
सिर झुका फिर क्यों गिड़गिड़ाना जरूरी है ?
सिर उठा कर गर्व से देते न क्यों ललकार
भुखमरी स्वीकार मुझको·····

— ३ —

जानता हूं है बड़ा मुझसे बहुत भगवान्
किन्तु उसको भी न दूं मैं तोड़ने निज मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय मनुज से सोचने की भी नहीं यह बात
प्रिय, मुझे निज आत्मा की शक्ति है सुज्ञात
वह महातूफान-आलोड़ित जलधि का ज्वार
भुखमरी स्वीकार मुझको·····

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव, अपना अपमान न कर

इससे बढ़ कोई पाप नहीं
मानवता पर अभिशाप नहीं
तू अपने को पहचान ज़रा यों परवशता का गान न कर
मानव, अपना अपमान न कर

— २ —

तू परवश औ' लाचार नहीं
विधि को तुझ पर अधिकार नहीं
तू ईश्वर है ओछी गंदी इस माया का सन्मान न कर
मानव, अपना अपमान न कर

— ३ —

तूने निज को लाचार कहा
सब त्रिभुवन ने धिक्कार कहा
तेरा अपनापन चीख उठा औ' चीख उठे अरमान विधुर
मानव, अपना अपमान न कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौटा मान कभी क्या जाकर ?

कभी दुबारा भी खिलता है गया ओस का जो मोती झर ?
चला कभी जाता है यदि धन
मानव होता बिल्कुल निर्धन
एक दिवस शतगुण धन वैभव से भी भर सकता उसका घर
लौटा मान.....

— २ —

बिगड़ा स्वास्थ्य सुधर जाता है
घाव बड़ा भी भर जाता है
देह नष्ट हो जाए मानव पाता फिर कोमल नव सुन्दर
लौटा मान.....

— ३ —

पर जो सपना खो जाता है
नहीं लौट कर फिर आता है
नहीं कभी होता है ऊंचा एक बार जो झुक जाता सिर
लौटा मान.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहन लिया वैरागी बाना

अरे जवानी में ही हमने
पहन लिया वैरागी बाना
हमने देख लिया है तारा
देखो नभ में हुआ इशारा
बहुत दूर निस्तब्ध शून्य से
देखो उसने हमें पुकारा
क्या तुमको आश्चर्य अभी तो
हम पर दिखती तुम्हें जवानी
अरे, हमारी यात्रा भी तो
बहुत कठिन भीषण तूफानी
योग भोग दोनों के हित ही
इष्ट यहां यौवन मस्ताना
अरे जवानी में ही·····

— २ —

पलित वलित हो जाने पर क्या
मृत्यु-सुन्दरी से रस क्रीड़ा
वह चिर युवती, बहुत कठिन है
उसकी रति आलिङ्गन-पीड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाशक्ति वह दिव्य सुन्दरी
है ताण्डव नर्तन की माती
जिसके दृग ज्योतिर्मय उसको
ले जाती है गाती गाती
शतशत यौवन संग्रह कर ही
संभव उसको गले लगाना
अरे जवानी.....

— ३ —

जब तक चल सकते हो भाई
अविरत कदम बढ़ाए जाओ
एक से शिखर से अन्य शिखर
अपने पांव जमाए जाओ
जितने क्षितिज पार कर सकते
दौड़ दौड़ कर पार करो तुम
औ' जितने प्याले भर सकते
सँभल सँभल कर उन्हें भरो तुम
शिथिल चरण कर होने पर फिर
कैसा पीना और पिलाना
अरे जवानी.....

— ४ —

होने लगें शिथिल जब पद ये
तुम निज को चोटी पर पाओ
चरणों के नीचे उपत्यका
को देखो मुख से मुस्काओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले जब आए जरा हाथ में
धवल मुकुट तुमको पहनाने
वह देखे तुमको हिमपरियां
पहले से लग रहीं सजाने
तब संघर्ष जवानी अनुभव
का गाओ तुम मधुर तराना
अरे, जवानी.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब काला तम छा जाता है

जब उज्ज्वल तारे खिलते हैं
शीतल चन्दा मुस्काता है
तब सिन्धु-परी की गोदी में
लेटा रवि कहता व्यर्थ हुआ
मेरे दिन भर के जलने का
क्या लाभ हुआ क्या अर्थ हुआ ?
छाया फिर काला अन्धकार
कण कण में तम का ही प्रसार
यह कहकर दुःखित नीरव रवि
हो शिथिलगात्र पड़ जाता है
जब काला.....

— २ —

तब कहती उसको सिन्धु-परी—
रवि जलना तेरा व्यर्थ नहीं
तेरे दिन भर की जलन सिमट
उडुगण औ' शशि में चमक रही
झिलमिल झिलमिल शीतल शीतल
मञ्जुल मञ्जुल स्वप्निल स्वप्निल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपिल रूपिल स्वर्णिम स्वर्णिम
जग में जीवन रस आता है
जब काला.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाड़ी छूट गई

गाड़ी छूट गई अब पैदल
चला जा रहा हूं मैं पथ पर
यह नहीं कि सीट न थी खाली
या पहुँचा था मैं लेट वहां
मैं बैठ सीट से उतर गया
जग लखता यह साश्चर्य रहा
दी गाड़ी ने सीटी, स्टेशन
पर खड़ा रहा मैं बन पत्थर
गाड़ी छूट गई अब पैदल
चला जा रहा हूं मैं पथ पर

— २ —

यदि गाड़ी में बैठा रहता
तो पाँव पसार ससुख सोता
वह गाड़ी मुझको ले जाती
कोई भी कष्ट नहीं होता
हैं खिन्न मूर्खता पर मेरी
सब इष्ट मित्र ये नारी नर
गाड़ी छूट गई अब पैदल
चला जा रहा हूं मैं पथ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— ३ —

ले जाने वाले बहुत मिले
अपने कंधे पर मुझे उठा
पर सबने वह कीमत मांगी
बस मेरा मन तन कांप उठा
बस बिन सोचे अपना भविष्य
मैं कूदा उतर गया भू पर
गाड़ी छूट गई अब पैदल
चला रहा हूं मैं पथ पर

— ४ —

क्यों उतर गया यह है रहस्य
तुम पूछ भला क्या पाओगे
हे आत्मा का सौदा करने
वालो, इसको क्या समझोगे
अपनी मंजिल को बेच
पहुँचना चाह रहे जो मंजिल पर
गाड़ी छूट गई अब पैदल
चला जा रहा हूं मैं पथ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी मांगने को मेरा कर·····

कभी मांगने को मेरा कर
देखा तूने बढ़ता ?
मैंने कब तुझसे मांगा है
फूलों का मधु उपवन
मलय - समीर - व्यजन - सम्मोहित
कुसुमाकर का नर्तन
है तुझको सुज्ञात कि अब तक
कभी न कर फैलाए
कभी न आया तेरे सन्मुख
अपना सीस झुकाए
क्या मैंने तुझको दिखलाई
कभी तनिक उत्सुकता
कभी मांगने·····

— २ —

तेरे साथ मिलाकर आंखें
रहता हूं मैं प्रियतम
तेरा प्रेमी होकर कैसे
होऊं तुझसे कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरा मेरा दानी भिक्षुक
का है प्राण, न नाता
फिर कैसे मैं प्यारे, तेरे
सन्मुख कर फैलाता
भाव स्वप्न का राजा नहीं
कभी अभाव से डरता
कभी मांगने.....

— ३ —

और अगर मैं झुक भी जाऊं
क्या तुझको भाएगा ?
अपनी प्रतिछवि लखकर यों तू
प्राण, न शरमाएगा ?
नीची आंखों से देखूंगा
कैसे तुझको प्यारे
सुन्दर सन्ध्या ऊषा निशिकर
दिनकर झिलमिल तारे
केवल लख पाऊंगा जड़
पृथ्वी की अविचल स्थिरता
कभी मांगने.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पन्थी, इस क्षण से पहले जो बीता वह बीता

नव क्षण में है नई बात अब
नव ऊषा है नई रात अब
धीरे धीरे भर जाएगा घट जो है रीता
पन्थी.....

— २ —

जब उठ जाओ तब आशा है
यह जीवन की परिभाषा है
तभी नया उत्थान शुरू है जब मन को जीता
पन्थी.....

— ३ —

लक्ष्य नहीं भूले जीवन का
संयम होवे मन का तन का
भूल बात बीती बढ़ आगे यह जीवन-गीता
पन्थी.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ भी तेरे अनुकूल नहीं

कुछ भी तेरे अनुकूल नहीं
सब कुछ तेरे प्रतिकूल सखे
पर इससे तू क्यों घबराता
यह तेरी शक्ति-परीक्षा है
यदि इसको जीत न पाया तू
क्या तेरी शिक्षा दीक्षा है
उठकर तू नित्य सबेरे निज
नैया का लंगर खोल सखे
हों गरज रही सम्मुख लहरें
तू मानव की जय बोल सखे
तू विश्व चराचर का स्वामी
मानव, इसको मत भूल सखे
कुछ भी.....

— २ —

नव पथ के पन्थी के हित हैं
श्रम तप अनिवार्य असाधारण
बहती हैं स्वेद बिन्दु धारें
करना पड़ता प्रकृति से रण
करना पड़ता रण अग जग से
उसके विरुद्ध यह सृष्टि सखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके विरुद्ध जन जन उसकी
है भिन्न विश्व से दृष्टि सखे
तू फूलों का सुन्दर स्रष्टा
यह सब सहजन्मा फूल सखे
कुछ भी.....

— ३ —

ओ मानव, मत घबरा झुंझला
तू जूझ युद्ध में शान लिए
आंखों में अविचल दृढ़ निश्चय
अधरों पर मधु मुस्कान लिए
कर युद्ध प्रशिक्षण क्रुद्ध न हो
बढ़ अपने पथ पर अनिश सखे
लो अगर न टक्कर लहरों से
तो क्या पाएगा कूल सखे
सब कुछ.....

— ४ —

चिर लक्ष्य दृगों के सन्मुख हो
हों चरण प्रगति के नव पथ पर
श्रम की बूंदें हों मस्तक पर
प्राणों में शत शत जय के स्वर
हो बुद्धि शान्त योजनायुक्त
अन्तर में निश्चय अचल सखे
उल्लास वदन पर हो प्रतिपल
हो जीवन में गति प्रबल सखे
तू भूल लहर के झूले पर
संघर्ष प्रगति का मूल सखे
सब कुछ.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब मैं कैसे वापस जाऊं ?

बहुत दूर लहरों से तट पर
चला जा रहा था मैं बचकर
सोचा था क्यों इन लहरों से मैं निज जीवन को उलझाऊं

— २ —

किन्तु एक दिन शुचि मुक्ताएं
फैलातीं झिलमिल आभाएं
झलकीं युग नयनों के सन्मुख, जागी इच्छा, इनको पाऊं

— ३ —

सन्मुख था तूफानी सागर
कूद गया मैं दृढ़ निश्चय कर
मैं असफल हो लौटूं इससे अच्छा लहरों बीच समाऊं
अब मैं कैसे वापस आऊं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे चाहिए ऐसा साथी संग बहे मँझधार

संगी बहुत मिले पद पद पर
मुझे खींच ले आते तट पर
कहते नयनों में नयन डाल—'हैं मुझको तुझसे प्यार'
मुझे.....

— २ —

मैं उनको क्या उत्तर देता
चुभती मुझको तट की रेता
बड़ी खुरदरी निश्चेतन जड़ यह कैसा आधार
मुझे.....

— ३ —

कूद धार में हूं मैं जाता
साथी है तट पर चिल्लाता
मेरा दोष बतादो मुझको प्रिय तुम करो विचार
मुझे.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नदी

मुझे नदी से प्यार है

तन में पुलक उमंग है
उठती तुङ्ग तरङ्ग है
रसान्वित अङ्ग अङ्ग है

जीवन का नव ज्वार है
मुझे नदी से प्यार है

— २ —

इसमें कल कल गान है
भरा हुआ तूफान है
जीने का सामान है

स्वागत है फूत्कार है
मुझे नदी से प्यार है

— ३ —

इसमें गति है नाद है
इसमें स्वर संवाद है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन का आल्हाद है

सपनों का संसार है
मुझे नदी से प्यार है

— ४ —

मधुमय इसके कूल हैं
कविता के अनुकूल हैं
स्मृति से रञ्जित भूल हैं

रस से युक्त विचार हैं
मुझे नदी से प्यार है

— ५ —

हिमगिरि से यह आ रही
गीत प्रगति के गा रही
प्रतिक्षण आगे जा रही

जीवन की झनकार है
मुझे नदी से प्यार है

— ६ —

यह लहरों का खेल है
यहां विरह है मेल है
बूंदों की रंगरेल है

चेतन का जयकार है
मुझे नदी से प्यार है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— ७ —

आ साथी मँझधार में
क्षण लहरों के प्यार में
लगा ध्यान मत पार में

रे हर लहर अपार है
मुझे नदी से प्यार है

— ८ —

नदी नीर का नाम है
यह गति का परिणाम है
नीर नहीं क्या काम है

बालू का अम्बार है
मुझे नदी से प्यार है

— ९ —

शम्भुजटासनबन्ध हो
हिमगिरि से सम्बन्ध हो
जल का स्रोत न बन्द हो

यह गङ्गा की धार है
मुझे नदी से प्यार है

— १० —

जो बरसाती धार है
शून्य मूल आधार है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह तो माल उधार है

वह भी क्या व्यापार है
मुझे नदी से प्यार है

— ११ —

सदा कूल से रूठना
नित लहरों से जूझना
नई पहेली बूझना

यह जीवन का सार है
मुझे नदी से प्यार है

— १२ —

उठ बढ़ तट को छोड़ दे
मन का बन्धन तोड़ दे
जीवन गति को मोड़ दे

रस की निधि मँझधार है
मुझे नदी से प्यार है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्धि-पत्र

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
५	४	हूं	कहूं
६	१०	कैम्पस्	92595
१४	१४	हुआ	दुआ
१८	१८	चपचाप	चुपचाप
४३	२०	युद्ध	मृत्यु
४८	७	आरोश	आकाश
५४	१	विधाँत	विधाता
५८	१	नहीं नहीं	नहीं
५९	१३	सघर्षों	संघर्षों
७२	१०	एक से शिखर से अन्य शिखर	एक शिखर से अन्य शिखर पर
८२	१३	कूज	कूल

पुस्तकालय

पं० आचार्य प्रियव्रत वेद
वाचस्पति
स्मृति संग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

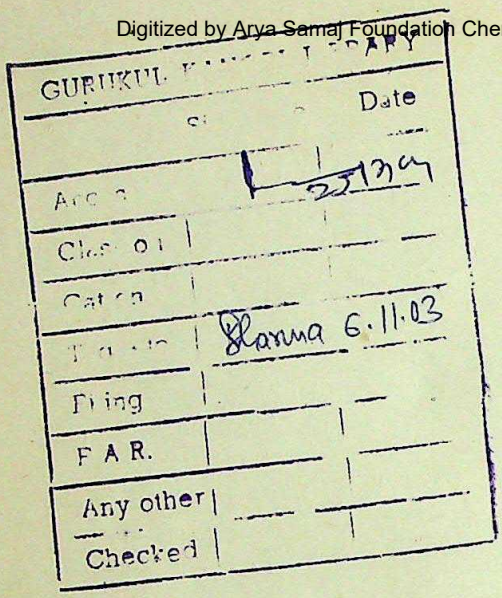

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar